बचपन की कश्ती

हर चाल में जि सके हो उछाल
पंछी सी उड़े हर डाल डाल
वैसी चलती है इसकी नाव
बचपन से है सबको चाव।

खुशि यों में धुली, मीठी यादो में लदी
बालपन है एक स्वछंद नदी
नाना-नानी की अच्छी कहानी
दादा-दादी की बातें सुहानी ।

पर बचपन की भी हैं समस्याएं
डराती हैं गणि त की संख्याएं
चक्कर देते हैं इति हास-भूगोल
भाई पृथ्वी तो है सि र्फ गोल-मोल
पढ़ा नहीं तो आएगा अंडा
फि र पड़ेगा माँ से ज़ोरो का डंडा
पापा से मि लेगा उत्तम ज्ञान
भूलना होगा मान-सम्मान
बच्चों का है सखु मय जीवन
अगर न हो परीक्षाओं का ग्रहण।

यारों की मासूम दोस्ती
साथ- साथ करते हम मस्ती
चाहे आए कि तनी भी चुनौती
फि र भी प्यारी लगती है बचपन की कश्ती।

पीयुषी झा
8 डी